33.0 राधावल्लभ सम्प्रदाय का भक्ति-दर्शन और सिद्धांत

- कीरति बल्लभ देव पाठक, सीनियर रिसर्च फैलो (संगीत एवं सूक्ष्म कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय)
  Email Id - keeratiballabh@gmail.com

शोध-सार

सम्प्रदाय भारतीय भक्ति परम्परा की एक विशिष्ट शाखा है, जिसकी स्थापना गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु जी द्वारा ब्रज में की गई। यह सम्प्रदाय श्रीराधा को परम आराध्य रूप में प्रतिष्ठित करता है। श्यामा-श्याम जू की रसोपासना के माध्यम से नित्य अष्टयाम-सेवा करना व उनकी नित्य-विहार लीलों का दर्शन कर उच्चतम आध्यात्मिक अनुभूति करना ही इस सम्प्रदाय के रसिकजन का उद्देश्य है। यह सम्प्रदाय वेद, उपनिषद, भागवतादि ग्रन्थों का आधार लेकर भी अपनी विशिष्टता में अनन्यता रखता है। राधावल्लभ सम्प्रदाय ने भक्ति को केवल उपासना नहीं, अपितु एक रसात्मक आध्यात्मिक यात्रा के रूप में विकसित किया है। राधावल्लभीय परम्परा के संदर्भ में ब्रज के वैष्णव भारतीय संगीत और साहित्य की उस परंपरा के संवाहक हैं, जहाँ भक्ति, काव्य और दर्शन परस्पर विलीन हो जाते हैं। इस सम्प्रदाय का भक्ति-दर्शन न केवल आध्यात्मिक साधना का साधन है, अपितु सौंदर्यबोध की चरम अभिव्यक्ति भी है। गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु ने अपने भक्ति-दर्शन के माध्यम से न केवल राधावल्लभ सम्प्रदाय की स्थापना की बल्कि वैष्णव भक्ति के प्रति अपने अद्वितीय दृष्टिकोण से भारतीय भक्ति दर्शन, आध्यत्म, संगीत और साहित्य को एक नई दिशा दी। उनके काव्य में कृष्ण और राधा के प्रेम का जो गूढ़ रूप प्रस्तुत किया गया, वह आज भी भक्तों के हृदय में गूंजता है और वैष्णव भक्ति परंपरा के अमूल्य रत्न के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह शोध-पत्र भक्ति-दर्शन के धरातल पर सम्प्रदाय के धार्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप का विश्लेषण करता है, साथ ही इसके प्रमुख सिद्धांतों, ग्रंथों एवं साधना-पद्धतियों की गहन समीक्षा करता है। शोध का उद्देश्य इस सम्प्रदाय की साहित्यिक व सांगीतिक विशिष्टताओं को उजागर कर भक्ति परम्परा में इसके योगदान को रेखांकित करना है।

बीज शब्द- *राध्वाल्लभ, भक्ति दर्शन*

प्रस्तावना

राधावल्लभ सम्प्रदाय के स्वरूप को जानने के लिए सर्वप्रथम गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु द्वारा रचित साहित्य की समीक्षा करते हुए समझना होगा।

"श्रीराधिका-पद-सरोरुह-भक्तिमेव
जानन्ति ये जनपथेषु तु दुर्लभां ताम्।
ते वै सदा निज-हृदि प्रकटां वहन्ति
राधावल्लभं परमं परमेश्वरं तम्॥"

जो श्रीराधिका के चरणकमलों की भक्ति को जान लेते हैं, जो जन सामान्य के लिए दुर्लभ है, वे परम परमेश्वर राधा-वल्लभ को अपने हृदय में सदैव प्रकट अनुभव करते हैं।"कृष्ण का आनन्द, माधुर्य, और लीला-शक्ति राधा में ही पूर्ण रूप से प्रकट होती है।"[1] इस दर्शन को केन्द्र में रखकर श्रीजी की सहचरी, वंशी अवतार, संगीत, साहित्य और भक्ति परंपरा के अद्वितीय स्तंभ गोस्वामी श्री हितहरिवंश महाप्रभु द्वारा १६वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राधावल्लभ सम्प्रदाय का प्रवर्तन ब्रज में हुआ, जिनका सम्पूर्ण दर्शन, साधना एवं साहित्यानुसंधान श्रीराधा की अप्राकृत माधुर्यलीला के अनन्त रहस्यों की अभिव्यक्ति है।

श्रेष्ठ ग्रंथकार और रसमीमांसी हित हरिवंश जू द्वारा रचित सम्प्रदाय के मूल ग्रंथ राधासुधानिधि, हितचतुरासि, यमुनाष्टक और स्फुट-वाणी को ही वैदिक-भाष्य माना गया है। जिसमें सहचरी-भाव और 'रसोपासना' के माध्यम से प्रिया-चरण-प्रधानता

[1] १. शर्मा, हरिप्रसाद ."Radha-Paratattvavada in the Radhavallabhi Tradition", Journal of Vaishnava Studies 12, no. 3 (2004)

की उजागरता को हरिवंश जी ने सर्वप्रथम प्रकाशित किया। इस सम्प्रदाय में राधा को अधिष्ठात्री-देवी, गुरु, गुरु-मंत्र व परम तत्त्व माना गया है। वैकुण्ठाधिपति श्रीकृष्ण, गोवर्धनधारिणो माधव, यद्यपि समस्त भक्ति-सम्प्रदायों के केन्द्रस्थ देवता माने जाते हैं, तथापि राधावल्लभ सम्प्रदाय की विशेषता इस तथ्य में निहित है कि यहाँ राधा ही समस्त उपासना की परम धुरी हैं। इस सम्प्रदाय में श्रीराधा को 'स्वयम् परात्परा शक्तिः' स्वीकारते हुए, उनकी निष्काम भक्ति को परम साध्य माना गया है।

"राधिकायाः परं नास्ति
देवीं तां रसमूर्तिमाम्।
तस्याः प्रीतिरेव लक्ष्यं
न कृष्णः केवलं प्रियम्॥"

अर्थात् राधा से बढ़कर कोई नहीं, वह दिव्यता की परिपूर्ण मूर्ति हैं और रस की मूर्तिमान अभिव्यक्ति। उनके अस्तित्व का मूल उद्देश्य केवल कृष्ण का प्रेम पाना नहीं, वरन् स्वयं प्रेम की प्रतिमूर्ति होना है। जहाँ कृष्ण स्वयं आकर्षित होते हैं। राधा प्रेम की चरम और शुद्धतम अभिव्यक्ति हैं, जहाँ प्रेम स्वयं ही लक्ष्य बन जाता है।

श्रीहित हरिवंश महाप्रभु द्वारा ब्रज में कई प्रमुख स्थलों जैसे राधा नवरंगी लाल (देववन), **राधा वल्लभ मंदिर, ऊँची थौर, मदन-टेर, मानसरोवर, वंशीवट, सेवाकुंज, रासमण्डल, रसिक त्रिवेणी कुंज आदि** का पुनः प्राकट्य अपनी भक्ति, साधना और संगीत द्वारा किया गया। गोस्वामी हित हरिवंश जू ने ब्रज की केलि-कुंज, लताएँ, निकुंजोपासना, रसोपासना, यमुना, गोवर्धन और ब्रज-रज को ही श्यामा-श्याम जू की नित्य-विहार लीलाओं का दर्शन करने का माध्यम माना। हरिवंश महाप्रभु ने कला और साहित्य पर विशेष बल दिया जिसके परिणामस्वरूप राधावल्लभ सम्प्रदाय में तुलनात्मक रूप में अधिक साहित्य की रचना हुई। और यह ब्रज-भक्ति साहित्य भक्ति और साहित्यिक रचनात्मकता की स्थायी शक्ति का एक कालातीत प्रमाण है। तनारूपी मध्यकाल के इस ब्रज भक्ति साहित्य के अध्ययन व शोध से ही हम वैदिक साहित्य की जड़ों व आधुनिक-वर्तमान काल की शाखाओं तक पहुँच सकते हैं।

राधावल्लभ सम्प्रदाय धार्मिक अनुशासन मात्र नहीं, अपितु यह एक समर्पणयुक्त रसनिष्ठ प्रेममार्ग है – जहाँ शास्त्रार्थ से अधिक 'भावार्थ' का मूल्य है, और दर्शन से अधिक 'अनुभव' की महत्ता है।

सिद्धांत -

राधावल्लभ सम्प्रदाय की भक्ति-धारा, रसोपासना को केवल सौंदर्य या काव्य नहीं, बल्कि अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभूति का मार्ग बनाती है, जो परमानंदमयी लीलाओं के साक्षात्कार की ओर ले जाती है। यहाँ उपासक सहचरी-भाव से रसोपासना करता है। ब्रज में भक्ति केवल आराधना नहीं, बल्कि रसस्वादन की प्रक्रिया है, जिसमें भक्त स्वयं को रस का पात्र बना देता है। राधा माधव की नित्य-लीला की रसात्मक भक्ति प्रक्रिया को केवल स्वर्ण पात्र (अधिकारी व्यक्ति) ही धारण कर सकता है, जैसे शेरनी का दूध। राधावल्लभ सम्प्रदाय ने प्रेमा-भक्ति के मार्ग की उपासना के वंश को जन्म दिया जिससे निकुंज-लीलाओं की अनुभूति होती है।

रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।[2]

'रस' का तात्पर्य है परम आत्मानंद या ब्रह्मानंद, जिसे प्राप्त करने के बाद आत्मा पूर्ण आनंद की स्थिति में पहुँच जाती है। राधा-रस-रास-रसिक-रसना-रसमहिमा-रसोपासना इस सम्प्रदाय में यही मूल हैं। प्रिया लाल के प्रेम के वर्धन के लिए जब सखियाँ उस प्रेम के स्वरूप को उत्सव का रूप दे दे देतीं हैं, वही नित्य-उत्सव है। यहाँ उत्सवों में राधावल्लभ हैं जिसका सीधा सम्बंध भोग-राग-श्रृंगार से है। यहाँ भोग-राग-श्रृंगार के माध्यम से श्रीश्यामा-श्याम जू से लाड़ लड़ाना ही सारतत्त्व है तथा प्रेमरूपी 'हित तत्त्व' ही समस्त चराचर में व्याप्त माना है। इसी भाव से यहाँ 'अष्टयाम सेवा' अर्थात् आठों प्रहार अलग-अलग विधि से

[2] तैत्तिरीय उपनिषद्, २७.

नित्य-सेवा की जाती है। "राधावल्लभ परंपरा का केन्द्रीय सिद्धांत यह है कि राधा ही रस-स्वरूप परम चेतना हैं, और कृष्ण उस रस के अनुभवकर्ता।"[3]

'सेवा-सुख रसोपासना'

जहाँ सहचरी भाव से भक्त 'तत्सुखसुखिता:' के सिद्धांत का पालन करता है। स्वसुख की कामना शून्य कर अपने प्रिया-प्रियतम के सुख में ही स्वयम् सुख प्राप्त होना ही'तत्सुखी धर्म' है। यह समर्पण की चरण सीमा है जहाँ जीव स्वयम् न रहकर अपने इष्ट में समाहित हो जाता है।

"आदि न अंत विहार करें दोउ लाल प्रिया में भई न चिन्हारी''

वह नित्य-विहार जिसका न आदि है न अंत और जो वर्तमान में भी हो रहा है उस नित्य-विहार में लाल जू और लाड़ली जू प्रेम में ऐसे मदमस्त रहते हैं कि दोनों के पलक झपकते ही एक-दूसरे की रूप-माधुरी नवीन हो जाती है अर्थात हर क्षण इनका प्रेम-रस नवीन है। वैसे तो ब्रज में नवधा-भक्ति व्याप्त है परंतु राधवल्लभ सम्प्रदाय में विशेष रूप से 'प्रेम-लक्षणा' भक्ति होती है। रसिक संतों - हरिराम व्यास, दामोदर व्यास ने ब्रजभाषा साहित्य में माधुर्य-रस के स्वतंत्र काव्य-शास्त्र की स्थापना की।[4]

सब सौ हित निहकाम मन वृंदावन विश्राम।
राधावल्लभ लाल कौ हृदय ध्यान मुखनाम ।।[5]

इस सम्प्रदाय में 'रस लम्पटता' है इसलिए रसोपासना के रूप में सहचरी भाव से भक्ति-प्रेम-रस का आस्वदन करते हुए बिना किसी नियम या बंधन के अनवरत नाम जप की महत्ता है।

'हरी हरिवंश भेद नहीं होई, प्रभु ईश्वर जानै सब कोई'। भारतीय संस्कृति और ज्ञान-परम्परा में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। राधावल्लभ सम्प्रदाय में गुरु को राधा-वल्लभ की सेवा में पूर्णतः अनुरक्त एवं साक्षात श्यामा-श्याम जू की नित्य-विहार लीलाओं के दर्शन कराने वाले के रूप में देखा जाता है। गुरु के बिना राधा-कृष्ण की निष्काम-भक्ति की कल्पना अधूरी मानी जाती है। शिष्य को गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण करना होता है। "गुरु बिनु गति नाहिं" – यह भाव सम्प्रदाय के हर भक्त के हृदय में गहराई तक अंकित होता है। इसके अतिरिक्त भक्ति-प्रक्रिया एवं साधन के अंतर्गत उपासना की विधि, कीर्तन, वंदना, स्मरण, सेवा, संगीत और समाज-गायन की भूमिका है। इसके माध्यम से ही भक्ति-रस की अभिव्यक्ति, मानसिक मनन, ध्यान, विचलित भावों का शुद्धिकरण आदि किया जाता है।

निष्कर्ष -

अत: ब्रज की लोक संस्कृति, जहाँ रस की विविधता और गहराई प्राचीन काल से विद्यमान है, वहाँ सभी वैष्णव सम्प्रदाय विशेषत: राधावल्लभ सम्प्रदाय की रसोपासना ने विशेष प्रभाव डाला है। साहित्य, संगीत, कला, लोकगीत, लोकनाट्य और सांस्कृतिक अनुष्ठान आदि रसोपासना के सजीव माध्यम रहे हैं। राधावल्लभ सम्प्रदाय में (रसोपासना) भक्ति के यह सिद्धांत भारतीय भक्ति परंपरा को एक ऐसा भाव-सिद्धांत प्रदान करती है, जो न केवल धार्मिक साधना है, अपितु आध्यात्मिक सौंदर्य की उच्चतम अनुभूति भी है। यह सम्प्रदाय वेद, उपनिषद, भागवतादि ग्रन्थों का आधार लेकर भी अपनी विशिष्टता में अनन्यता रखता है। राधावल्लभ सम्प्रदाय का भक्ति-दर्शन और सिद्धांत भारतीय धार्मिक परंपरा में एक अद्वितीय स्थान रखता है। इसकी विशेषता इसका राधा कृष्ण के अद्वितीय प्रेम और समर्पण पर आधारित दृष्टिकोण है, जो भक्तों को एक गहरी आत्मिक शांति और एकात्मता का अनुभव कराता है। इस सम्प्रदाय के सिद्धांतों ने न केवल भक्ति के मार्ग को सरल और सार्वभौमिक बनाया, बल्कि भारतीय समाज में सामाजिक समरसता और एकता का भी संदेश दिया। राधावल्लभ सम्प्रदाय का यह अद्वितीय भक्ति मार्ग आज भी लाखों भक्तों के दिलों में बसा हुआ है और इसकी शिक्षाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। राधावल्लभ परम्परा में संगीत, नृत्य और

[3] पाठक, नागेन्द्र ."राधावल्लभ सम्प्रदाय में राधातत्व", दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2001, पृ॰58
[4] चतुर्वेदी, राधेश्याम ."ब्रज साहित्य का इतिहास", आगरा, ब्रज साहित्य मण्डल, 1965, , पृ॰ 214
[5] गोस्वामी, हित हरिवंश .स्फुट वाणी 24.1

साहित्य का विशेष महत्व है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि - ब्रज **की आत्मा यदि राधा हैं, तो राधावल्लभ सम्प्रदाय उस आत्मा की अभिव्यक्ति है।**

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

गोस्वामी, हित हरिवंश. (16वीं शताब्दी). राधा सुधा निधि. वृन्दावन: श्री राधावल्लभ सम्प्रदाय प्रकाशन।

मिश्र, डॉ. रामकरण शर्मा. (2002). राधावल्लभ सम्प्रदाय: एक ऐतिहासिक एवं सिद्धान्तात्मक अध्ययन. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।

तिवारी, डॉ. श्यामसुंदर. (1998). रसोपासना की परम्परा और राधावल्लभ सम्प्रदाय. दिल्ली: नागरी प्रचारिणी सभा।

अग्रवाल, डॉ. विष्णुकांत. (1983). भक्ति आन्दोलन और हिन्दी साहित्य. दिल्ली: साहित्य भवन।

जोशी, डॉ. हरिनारायण. (1995). गौड़ीय और राधावल्लभ सम्प्रदाय: तुलनात्मक अध्ययन. जयपुर: राजस्थानी ग्रंथागार।

चतुर्वेदी, डॉ. धर्मनाथ. (2001). रस सिद्धान्त और राधावल्लभ सम्प्रदाय में उसकी अभिव्यक्ति. वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान।

वर्मा, डॉ. रमेशचन्द्र. (1990). हिन्दी भक्ति काव्य में राधा तत्व. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य परिषद्।

त्रिपाठी, डॉ. वसुधा. (2005). राधा-कृष्ण भक्ति परंपरा और रसोपासना. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।

दास, डॉ. रामस्वरूप. (1987). राधावल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य और साहित्य. वृन्दावन: रासबिहारी प्रकाशन।

रोसेनस्टीन, लूसी. (2010). राधावल्लभ और हरिदासी सम्प्रदायों की तुलना: भक्ति परंपराओं का अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ वैष्णव स्टडीज़, **12**(3), 89–101.